Abhishek 6|8|20

Shastri - IInd Yr 6|8|20

मुद्रा के दोष (~~Disadvantages~~ Disadvantages of Money)

वास्तव में मुद्रा के बहुत सारे लाभ हैं लेकिन इसके बहुत सारे दोष भी हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि जहाँ मुद्रा ने मानव-जीवन को सरल एवं सुगम बनाया है, वहीं मुद्रा ने लालच एवं मोह उत्पन्न करके मनुष्य में शोषण की प्रवृत्ति को भी जन्म दिया है। वास्तव में मुद्रा से समाज को निम्नलिखित हानियाँ (disadvantages) भी होती हैं — ① उधार देने और बचत पर मुद्रा का आवरण (The monetary veil over lending and saving) → हमें ज्ञात है कि मुद्रा का एक प्रमुख लाभ यह है कि इससे सभी प्रकार के ऋण (loan) तथा भविष्य के भुगतानों में सहायता मिलती है। प्रो. Robert [illegible] के अनुसार मुद्रा का यह लाभ एक बहुत बड़े दोष का कारण हो जाता है और इस उधार देने एवं बचत की क्रियाएँ मुद्रा के आवरण से ढकी हैं और इस आवरण के पीछे यथार्थ में जो कुछ भी होता है, वो प्रायः इससे भिन्न होता है जो समाज के लिए घातक होता है। कभी-कभी मुद्रा-प्रणाली इस प्रकार कार्य करती है कि लोगों की उधार देने और बचत की इच्छा ही बिल्कुल निष्क्रिय (lagging) हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप हजारों की संख्या में लोग बेकार हो जाते हैं, और इस प्रकार सम्पूर्ण औद्योगिक-व्यवस्था ही निष्क्रिय एवं विकृत होने लगती है। ② अत्यधिक पूँजीकरण और अधिक उत्पादन को प्रोत्साहन (Encouragement to over-Capitalization and over-Production) → मौद्रिक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत ऋण के लेन-देन में सुविधा के कारण उद्योगपतियों को सुगमता से ऋण मिल जाता है, इसी प्रवृत्ति से उद्योगों तथा व्यवसाय में अत्यधिक पूँजीकरण तथा अधिक उत्पादन होता है जिससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ही अस्त-व्यस्त हो जाती है। ③ सम्पत्ति एवं आय के वितरण में विषमता (Inequality in the distribution of Income and Wealth) → मुद्रा का एक प्रमुख दोष यह है कि इससे समाज में धन एवं आय के वितरण की विषमता उत्पन्न होती है, चूँकि मुद्रा ने बड़े पैमाने के उत्पादन के कार्य को आसान बनाया है। पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली का उद्गम मुद्रा के कारण ही हुआ है, इस प्रणाली में उत्पादन के साधनों पर निजी व्यक्तियों का स्वामित्व रहता है, जिससे धनी और अधिक धनी तथा निर्धन वर्ग अधिक निर्धन होते जाते हैं। धन एवं आय के वितरण की यह विषमता यदा-कदा सामाजिक तथा राजनैतिक असंतोष का कारण भी बन जाती है, यह मुद्रा का भयंकर दोष है। इस प्रकार मुद्रा के उपरोक्त सारे दोष हैं, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम मुद्रा का परित्याग कर दें। वास्तव में मुद्रा के उपरोक्त सारे दोष मानव स्वभाव के कारण उत्पन्न होता है। यदि कोई व्यक्ति [illegible] उधार लेकर अपव्यय करता है और [illegible] अनावश्यक वस्तुओं का उत्पादन करता है अथवा सरकार मुद्रा [illegible] करती है, [illegible] तो इनके लिए मुद्रा को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है? मुद्रा साधन है साध्य नहीं। अतएव इसका उपयोग एवं दुरुपयोग [illegible] अर्थात् समुचित नियंत्रण द्वारा इसके दोषों को दूर किया जा सकता है। इस प्रकार मुद्रा जो मानवता के लिए कितनी ही दृष्टियों से वरदान सिद्ध हुई है, नियंत्रण के अभाव में हमारे लिए संकट एवं अभिशाप का कारण भी हो सकती है। —

R.K.S. College Sukhasena

शास्त्री - Ist
For Final Exam - 202

आवश्यकताओं का वर्गीकरण (Classification of Wants)

साधारणतया मानवीय आवश्यकताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है :- (A) अनिवार्य आवश्यकताएं :- अनिवार्य आवश्यकताएं वे हैं जिनकी पूर्ति जीवन रक्षा, कार्यक्षमता तथा सामाजिक रीति-रिवाज की दृष्टि से अनिवार्य एवं आवश्यक होती है। अनिवार्य आवश्यकताएं भी मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं :- (I) जीवनरक्षक अनिवार्य आवश्यकताएं :- प्रायः इस श्रेणी में ऐसी आवश्यकताएं आती हैं, जिनकी संतुष्टि के बिना हम नहीं रह सकते। जैसे- भोजन, वस्त्र, आवास। (II) निपुणतारक्षक आवश्यकताएं :- ऐसी आवश्यकताएं जो मनुष्य की कार्यक्षमता में तत्काल वृद्धि करे उसे हम ~~जीवन रक्षक~~ निपुणतारक्षक अनिवार्य आवश्यकता कहते हैं जैसे - फल, दूध आदि पौष्टिक पदार्थ इत्यादि। (III) प्रतिष्ठारक्षक अनि० आवश्यकता :- अब साथ ही इस श्रेणी में वे आवश्यकताएं आती हैं, जिनकी पूर्ति सामाजिक रीति-रिवाज तथा परम्परा के पालन के लिए आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए हिन्दू परिवारों में शादी-ब्याह एवं श्राद्ध कर्म में खर्च, अतिथि के सत्कार इत्यादि अवसरों पर आवश्यक होती है। (B) आरामदायक आवश्यकताएं (Comforts) :- इस तरह की आवश्यकताएं जिनका उपभोग करने से मनुष्य को तत्काल आराम की प्राप्ति होती है उसे हम आरामदायक आवश्यकता कहते हैं। जैसे - गर्मी में बिजली पंखा का प्रयोग, जाड़े में हीटर आदि का प्रयोग आदि। (C) विलासिता संबंधी आवश्यकता (Luxurious) :- इस तरह की आवश्यकताएं जिनका उपयोग करने से मनुष्य को अत्यधिक सुख का अनुभव होता है उसे हम विलासिता संबंधी आवश्यकता कहते हैं जैसे- स्वादिष्ट व्यंजन का प्रयोग, गर्मी में कूलर का प्रयोग इत्यादि। विलासिता संबंधी आवश्यकता भी दो तरह की होती हैं - (i) अहानिकारक विलासिता (Harmless luxuries) :- इन आवश्यकताओं के अन्तर्गत कीमती वस्त्र, शानदार मकान, बहुमूल्य आभूषण, कीमती गाड़ी आदि वस्तुएं सम्मिलित की जाती हैं। इसे वस्तुओं के उपभोग से न तो हमारी कार्यक्षमता में कोई वृद्धि होती है, न ही कार्यक्षमता में कोई कमी आती है। (ii) हानिकारक विलासिता (Harmful luxuries) :- इस तरह की विलासिता वस्तुएं जिसका सेवन करने से मनुष्य की कार्यक्षमता पर बुरा असर पड़ता है उस तरह की आवश्यकता को हम हानिकारक विलासिता कहते हैं जैसे - शराब या अन्य मादक वस्तुओं का सेवन करने से होता है।

[redacted] प्रो० - ब्रजेश पाठक - 6/8/20
(अर्थ० विभाग)
R.H.S. College Sukhsena Purnea. [redacted]

श्रम, एवं श्रम की विशेषताएं (Labour)

उपशास्त्री फि 2020
Final Exam

भूमि (Land) की ही तरह श्रम भी उत्पादन का एक मौलिक एवं अत्याज्य साधन है। अर्थशास्त्र में श्रम से मनुष्य के उन सभी शारीरिक एवं मानसिक प्रयत्नों का बोध होता है, जो धनोत्पादन की दृष्टि से किये जाते हैं। इस प्रकार मनोरंजन के उद्देश्य से फुटबॉल खेलना, माता-पिता द्वारा अपने बच्चों की सेवा करना, पुत्र द्वारा पिता की सेवा, तथा देश भक्ति आदि धनोत्पादन की दृष्टि से नहीं किये जाते इसलिए ये श्रम नहीं कहलायेंगे। ठीक इसके विपरीत धनोपार्जन के उद्देश्य से फुटबॉल खेलना, नौकर द्वारा बच्चों की सेवा करना, कारखाने में मजदूरों के द्वारा कार्य करना, वकील, शिक्षक, नाई के कार्य चाहे वे शारीरिक हो या मानसिक, अर्थशास्त्र में 'श्रम' कहे जाते हैं। Prof- Jevons ने श्रम की परिभाषा इस प्रकार दी है:- "श्रम वह मानसिक या शारीरिक प्रयत्न है जो पूर्णतया या अंशतया कार्यजन्य सुख के अतिरिक्त किसी आर्थिक उद्देश्य से किया जाता है।" (Labour connotes all human efforts of body or of mind, undertaken in the expectation of reward.) अर्थशास्त्र में श्रम के अन्तर्गत केवल मानवीय प्रयत्न ही सम्मिलित किये जाते हैं, वास्तव में श्रम के अन्तर्गत मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के प्रयत्न सम्मिलित रहते हैं। मनुष्य के केवल उन्हीं प्रयत्नों को श्रम कहा जाता है, जो किसी आर्थिक उद्देश्य से किये जाते हैं। अतः धनोत्पादन के उद्देश्य से किये जाने वाले मनुष्य के सभी शारीरिक एवं मानसिक प्रयत्नों को अर्थशास्त्र में श्रम (Labour) कहा जाता है।

श्रम की विशेषताएं!— ① श्रम उत्पादन का अनिवार्य साधन है। इसके बगैर किसी भी प्रकार का उत्पादन संभव नहीं है। श्रम द्वारा ही भूमि, तथा प्राकृतिक साधनों का प्रयोग संभव होता है। उत्पादन के कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं, इस प्रकार श्रम उत्पादन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतएव श्रम उत्पादन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

② श्रम नाशवान है (Labour is Perishable):— श्रम अत्यन्त नाशवान वस्तु है, यदि किसी दिन श्रमिक कार्य नहीं करता, तो उस दिन का उसका श्रम नष्ट हो जाता है, अन्य साधनों के साथ भी यह असुविधा नहीं पायी जाती है, जैसे उदाहरण के लिए कोई दुकानदार आज अपना कलम नहीं बेचे तो उसे कल बेच सकता है। P. T. O — क्रमशः

किन्तु श्रम अन्य वस्तुओं की तरह एकत्र करके नहीं रखा जा सकता। उदाहरण के लिए कोई श्रमिक आज काम नहीं करता है तो उसका आज का श्रम बिल्कुल बेकार हो जाता है। क्योंकि वह आज के बदले कल कार्य नहीं कर सकता, इस प्रकार श्रम अत्यधिक नाशवान है।

③ **श्रम को श्रमिक से पृथक नहीं किया जा सकता** :— भूमि अथवा पूंजी को उसके स्वामी से पृथक नहीं किया जा सकता है किन्तु श्रम के साथ ऐसी बात नहीं पायी जाती है। श्रम एवं श्रमिक में कोई अंतर नहीं होता है। मजदूर हाथ तथा मस्तिष्क से कार्य करता है, अतः श्रम को श्रमिक से अलग नहीं किया जा सकता है।

④ **श्रम उत्पादन का साधन और साध्य दोनों ही है** — मनुष्य अपने श्रम के द्वारा धन का उत्पादन करता है। किन्तु इस धन का उपभोग करने वाला भी स्वयं वही है इसलिए श्रम केवल उत्पादन का साधन ही नहीं, वरन् साध्य भी है।

⑤ **श्रम में गतिशीलता पायी जाती है** :— भूमि उत्पादन का अगतिशील (Immobile) धन है अतः उसकी स्थिति में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है किन्तु श्रम उत्पादन का अत्यधिक गतिशील साधन है। इसे एक स्थान से दूसरे स्थान अथवा एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में सुगमतापूर्वक ले जाया जा सकता है, फलतः श्रम भूमि की अपेक्षा अधिक गतिशील होता है।

⑥ **श्रम की पूर्ति धीरे-धीरे बढ़ती है** :— पूंजी की मांग में परिवर्तन के अनुसार उसकी पूर्ति में भी परिवर्तन किया जा सकता है, किन्तु श्रम की पूर्ति को शीघ्र घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता है। श्रम की पूर्ति जनसंख्या पर निर्भर करती है। जिसमें वृद्धि या कमी शीघ्र नहीं होती है।

⑦ **श्रम बुद्धि तथा निर्णय शक्ति का प्रयोग करता है** — मानव के नाते श्रमिक में बुद्धि तथा निर्णय शक्ति होती है। जिसका प्रयोग वह प्रत्येक कार्य के लिए करता है। उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता बुद्धि तथा निर्णय शक्ति का प्रयोग है।

⑧ **श्रम अपना श्रम बेचता है, अपने आपको नहीं** — वास्तव में श्रम केवल अपना श्रम बेचता है, अपने आप को नहीं। दूसरे शब्दों में श्रमिक अपना स्वामित्व स्वयं अपने आप में ही रखे रहता है, उत्पादक श्रमिक को नहीं खरीदता है केवल उसके श्रम को खरीदता है।

⑨ **श्रम उत्पादन का सजीव साधन है** — श्रम उत्पादन का एक सजीव साधन है। उत्पादन के अन्य साधन जैसे भूमि, एवं पूंजी निर्जीव है। उत्पादन के साधन के रूप में सजीव होने के कारण श्रम की इस विशेषता का बहुत अधिक महत्व है। सजीव होने के कारण श्रम के उपयोग में उत्पादक को पूंजी एवं भूमि की तरह स्वतंत्रता नहीं रहती है। उत्पादन के साधन के रूप में श्रम की उपर्युक्त सारी विशेषताएँ हैं।

——— x ——— x ——— x

R.L.S. college Sukhasena. Bleenali 6/8/20.